रिकार्ड– निर्बल से लड़ाई..... ओमशांति प्रातःक्लास 16–5–67

बच्चे जो अच्छे सेंसिबुल और समझदार हैं वो अर्थ तो अच्छी रीति समझ जाते हैं। जिनकी बुद्धियोग सुखधाम–शांतिधाम की तरफ ही है ;क्योंकि जिनका बुद्धियोग स्वर्ग तरफ है उनको ही तूफान लगता है। बाप तो अब तुम्हारा मुंह फेरते हैं। अज्ञान काल में भी पुराने घर से मुंह फिर जाता है। फिर नये मकान को याद करते रहते हैं कि कब तैयार होवें। अब तुम बच्चों को भी यही ध्यान है कि कब हमारे स्वर्ग की स्थापना हो जायेगी। स्वर्ग को तो जानते हो ना। तुम्हारा बुद्धि का योग स्वर्ग तरफ है। यह भी तुम जानते हो कि शांतिधाम में जाकर फिर सुखधाम में आवेंगे। इस दुःखधाम से तो सबको ही जाना है। सारी सृष्टि के मनुष्य मात्र को। बाप समझाते रहते हैं कि बच्चों अभी स्वर्ग के द्वार खुल रहे हैं। अब तुम्हारा बुद्धियोग हैविन की तरफ जाना चाहिए। हैविन में जाने वाले को कहा जाता है पवित्र। हेल में जाने वाले को अपवित्र कहा जाता है। गृहस्थ व्यवहार में रहते हुये भी बुद्धियोग हैवेन तरफ जाता है। समझो घर में बाप का बुद्धियोग हैवेन तरफ है और बच्चे का बुद्धियोग नर्क की तरफ है तो दोनों एक ही घर में रह कैसे सकते हैं। हंस और बगुले दोनों रह नहीं सकते हैं। बहुत मुश्किल है। उनका बुद्धियोग है ही पांच विकारों की तरफ। वो हेल तरफ जाने वाले वो हेविन तरफ जाने वाला। दोनों इकट्ठे रह नहीं सकते। बड़ी मंजिल है। बाप देखते हैं कि मेरे बच्चे का मुंह हेल की तरफ है। हेल तरफ जाने बिना रह नहीं सकता है तो फिर क्या करना चाहिए? जरूर आपस में झगड़ा होगा। कहेंगे यह भी कोई ज्ञान है कि बच्चा शादी नहीं करे। गृहस्थ व्यहार में रहते तो बहुत हैं ना। बच्चे का मुख हेल तरफ वो चाहती है कि हम वैश्यालय में जावें। विषय वैतरणी नदी में गोते खाउं। बाप कहते हैं कि नर्क की तरफ बुद्धि नहीं रखो ; परंतु बाप का भी कहना नहीं मानती है तो फिर क्या करना चाहिए?इस पर बहुत कड़ी बातें हैं। बाप का भी नहीं मानते तो लाचारी हालत में धक्का देकर फिर उसका कब मुंह भी नहीं देखना चाहिए ; क्योंकि पलीती बहुत हो गये हैं ना। यह सारा आत्मा में है। बाप की आत्मा कहती है कि हमने क्रियेट किया है। मेरा कहना नहीं मानती हो?कोई तो ब्राह्मण भी बनते हैं फिर बुद्धि चली जाती है हेल तरफ। तो वो अपने को जैसे कि डवल पाते (मारते) हैं। एकदम रसातल में चले जावेंगे। बच्चों को समझाया गया है कि यह है ज्ञान सागर की दरबार। भक्तिमार्ग में तो इंद्र दरबार भी कहा जाता है। पुखराज परी, माणिक परी बहुत ही नाम रखे हुये हैं ; क्योंकि ज्ञान डांस करते हैं ना। किस्म2 की परियां हैं। वो भी पवित्र चाहिए। अगर किसी अपवित्र को ले आईं तो सजा मिल जावेगी। इसमें बहुत ही पावन चाहिए। यह ज्ञान घर में तो बहुत ही घोटाला डालता है। बहुत हैं जिनको बच्चे–बच्चियां हैं। आज उनको शादी करवाते हैं। घर में रखेंगे। अब उनका बुद्धियोग तो है हेल तरफ। विषय गटर में एकदम कूद पड़ते हैं। बहुत बड़ी मंजिल है। स्त्रियां भी कहती हैं कि हम हेविन में जाना चाहती हूँ। अब पति नहीं चलते हैं तो क्या हाल होगा?हंस और बगुले इकट्ठे रह नहीं सकते हैं। फिर लड़ाई चलती है। मंजिल तो बहुत उंची है ना। इस ज्ञान को कोई भी नहीं जानते हैं। ना ही किसी शास्त्रों में ही यह ज्ञान है। इसलिए ही कहते हैं कि स्त्री और पुरुष भाई–बहन कैसे हो सकते हैं?यह तो बिल्कुल ही असम्भव है। इसलिए ही झाड़ जल्दी बढ़ता नहीं है। थोड़ा सा निश्चय हुआ फिर माया एकदम थप्पड़ गिरा देती है। तूफान है ना। छोटा सा दीवा उसको तो एक ही बार तूफान लगने से गिरा देता है। दूसरों को विकार में गिरता देखकर खुद भी गिर पड़ते हैं। इसमें तो बहुत बुद्धि चाहिए समझने की। गाया भी हुआ है अबलाओं पर अत्याचार। कोई2 को पूतनायें ,सूपनखायें भी बहुत2 अत्याचार करती हैं। एकदम नाक में दम कर देती हैं। विकार बिना रही ही नहीं सकती हैं। पति से विकार नहीं मिला तो फिर के पिछाड़ी पड़ती हैं। बड़े2 घरों में बहुत ऐसी2 रहती हैं। बहुत गंदी होती हैं। इसलिए ही कहा जाता है कि काम

महाशत्रु है। यह है गेट वे टू हैवेन। उनसे तो बहुत नफरत आनी चाहिए। बाबा बहुत ..... दिलाते हैं अभी। आगे यह बात नहीं थी। हेल तो अभी है ना। सन्यासी लोग भी नफरत दिलाते हैं। कहते हैं कि स्त्री सर्पण। वास्तव में तो खुद ही सर्प होते हैं। खुद ने ही स्त्री को सांपनी बनाया। मेल ही शादी करते हैं तो विकार में जाना शुरू करते हैं। इसलिए ही द्रौपदी ने पुकारा है। यह अभी की ही बात है। बांधेली भी अभी ही है। विख बिना रह नहीं सकते हैं। फिर कोई बहाना बनाकर निकल पड़ती हैं। पति को कहीं से मालूम पड़ गया तो खावेंगी मार। ऐसी स्त्री कोई मुश्किल ही होगी तो जो कि विकार के लिए पति को मारती होगी ;क्योंकि अबला है ना। उनमें इतनी तांत नहीं रहती है। अबलायें ही पुकारती हैं। अभी कितनी अच्छी रीति बाप समझाते हैं। फिर भी कोई की बुद्धि में बैठता नहीं है। यह गोले का चित्र बड़ा अच्छा है। गेट वे टू हैविन इस गोले के चित्र से बहुत अच्छी रीति समझ सकेंगें। सीढ़ी से भी इतना नहीं जितना कि उससे समझेंगे। दिन प्रतिदिन करैक्शन भी होती ही जाती है। बाप कहते हैं कि आज तो तुमको बिल्कुल ही नया डायरैक्शन देते हैं। पहले से ही थोड़े ही सब डायरैक्शन दे देंगे। दिन प्रतिदिन नये2 डायरैक्शन मिलते रहते हैं। कितनी मुश्किलात हो जाती है। बाप बच्चे की शादी नहीं करे तो कितनी मुश्किल हो जाती है। कोई फिर बच्चा ज्ञान में है। शादी नहीं करना चाहता है तो मां–बाप क्या हाल कर देते हैं। एकदम पुलिस के हवाले कर देते हैं। आजकल तो राज्य ही जैसे कि पुलिस का है। मार मारी जो कि उसकी हड्डी ही तोड़ डाली। कैसी दुनियां है। कितना बच्चों में मोह रहता है। बच्चा मर जाता है तो एकदम दीवाने हो जाते हैं। अथाह दुःख है। ऐसेनहीं कि साहुकार हैं तो सुख ही सुख है। नहीं। अनेक प्रकार की बीमारियां लगी रहती हैं। फिर हास्पिटल में पड़े रहते हैं। गरीब जनरल वार्ड में पड़े रहते हैं। साहुकारों को अलग2 वार्ड मिल जाता है ;परंतु दुःख तो जैसा ही गरीब को वैसा ही साहुकार को भी होता है। सिर्फ उनको स्थान अच्छा मिलता है। अभी तुम बच्चे जानते हो कि हमको बाप पढ़ा रहे हैं। बाप ने अनेंको बार पढ़ाया है। अपने दिल से पूछना चाहिए कि हम पढ़ते हैं कि नहीं कितनों को पढ़ाते हैं। अगर पढ़ावेंगे नहीं तो क्या पद पावेंगे। रोज रात को अपना चार्ट लिखो। आज किसी को दुःख तो नहीं दिया है। श्रीमत कहती है कि कोई को दुःख नहीं दो और ही रास्ता बताओ। जो हमारा भाती होगा उनको झट टच होगा। इसमें तो बर्तन चाहिए सोने का जिसमें यह अमृत ठहर सके। जैसे कहते हैं ना शेरनी का दूध के लिए सोने का बर्तन चाहिए ;क्योंकि उनका दूध बहुत भारी ताकत वाला होता है। शेर से भी शेरनी बहुत (छित्ती) होती है। उनका बच्चों में मोह रहता है। कोइ करे देखेंगे तो एकदम उछल पड़ेगी। समझेगी कि कहीं कोई बच्चे को मार नहीं डाले। यहां पर भी बहुत बंदरियां हैं जिनका पति, बच्चों आदि में मोह है। अब तुम बच्चे जानते हो कि स्वर्ग के गेट कैसे खुलते हैं। कृष्ण के चित्र में बहुत अच्छा क्लीयर लिखा हुआ है। इस लड़ाई के बाद स्वर्ग के गेट्स खुलते हैं। वहां बहुत थोड़े मनुष्य होते हैं। बाकी सब मुक्तिधाम में चले जाते हैं। सजायें बहुत खानी पड़ती हैं। जो भी पाप कर्म किया है एक2 जन्म में सजा खाते सा. करते जावेंगे। फिर पद पाई पैसे का पा लेंगे। याद में ना रहने कारण विकर्म विनाश नहीं होते हैं। तो घर में बाप का मुंह स्वर्ग की तरफ तो बच्ची का मुंह नर्क की तरफ तो उसको धक्का देकर उसका मुंह भी नहीं देखना चाहिए। उनको देखने से ही नफरत आवेगी। वो तो जैसे कि गटर में रहने वाली है। उसको ही विषय वैतरणी नदी कहा जाता है। शास्त्रों में भी कितना झूठ है। कह देते हैं कि गीता में भगवानोवाच्य है कि मैं सर्वव्यापी हूँ। तो खुद भी गिरते हैं ,सुनने वालों को भी गिराते है। गीता का भी प्रभाव कितना है ;परंतु फायदा तो कुछ भी नहीं है ना। जहां भी जाओ कह देंगे ईश्वर सर्वव्यापी है। अरे, यह कहां से सुना?कहेंगे भारत से। भारत के शास्त्र (गीता) की ही बात है। भारत ही निमित्त बना है नर्क में गिराने के। बाप खुद नर्क में जाता है

रचना को कहां ले जावेगा?जरूर नर्क में ही जावेगा। जब तक कि स्वर्ग के गेट का पता पड़े। आजकल तो शादियों की सीजन है। पोप आते हैं तो हजारों शादियां होती हैं। कल अखबार में पढ़ा था। पुरी का जो शंकराचार्य है उसने कहा है कि जैसे मुसलमान लोग 4/4 शादियां कर बच्चों की वृद्धि करते हैं तो वो जारे भरते (ज्यादा बढ़ते) जाते हैं। तो हिंदुओं को भी छुट्टी मिलनी चाहिए। 4/4 शादी करे और बच्चे पैदा करे। तुम लोगों ने अखबार में शायद पढ़ा नहीं है। जैसे कब2 अखबार पढ़ना मिस कर देते हैं वैसे ही कई बच्चे हैं कि ...मुरली भी मिस कर देते हैं। बहुत अच्छे2 बच्चे इसमें गफलत बहुत करते रहते हैं। समझते हैं कि नहीं पढ़ा तो क्या हुआ?हम तो पार हो गये हैं। मुरली की परवाह नहीं करते। ऐसे2 देहअभिमानी बहुत हैं बाबा जानते हैं। इसलिए ही यहां भी जब आते हैं तब भी बाबा पूछते हैं कि तुमने बहुत मुरलियां नहीं पढ़ी हुई होंगी। पता नहीं उनमें कोई बहुत अच्छा प्वाइंट्स हो। प्वाइंट रोज निकलते हैं ना। तो एक ही घर में बाप का बुद्धियोग एक तरफ ,बच्चे का दूसरी तरफ ,तो वो हो जाता है पापात्मा। वो पुण्यात्मा। वो याद की यात्रा पर है। वो गटर में जाने की यात्रा पर है ;परंतु आजकल मोह भी तो बहुत है ना। ऐसे भी बहुत सेंटर्स पर आते हैं ;परंतु धारणा कुछ भी नहीं। ज्ञान नहीं। श्रीमत पर नहीं चलेंगे तो पद थोड़े ही मिलेगा। सत बाप ,सत टीचर की ग्लानी कराने पर कब ठौर नहीं पाते हैं। यह राजयोग है ;परंतु सब तो राजा नहीं बनेंगे ना। प्रजा भी बननी है। नम्बरवार मर्तबे होते हैं ना। सारा मदार ही है याद पर। जिस बाप से विश्व की राजाई मिलती है उनको याद नहीं कर सकते हो?तकदीर में ही ना हो तो फिर बाप ही तदबीर भी क्या करे?बाप तो कहते हैं कि याद की यात्रा पर ही रहना है। इससे ही पाप भस्म होंगे। तो पुरुषार्थ करना चाहिए ना। बाबा कोई ऐसे भी नहीं कहते हैं कि खाना, पीना नहीं खाओ। हमारा कोई हठयोग नहीं है। चलते–फिरते सब कुछ काम करते जैसे कि आशिक माशूक को याद करते हैं। उनका नाम, रूप का प्यार होता है। हमारे पास भी बहुत बच्चियां हैं जो कि एक/दो को नहीं देखेंगे तो तड़फ मरेंगे। आपस में मिलती हैं तो बस.....पांच विकार बहुत शैतान है। कोई ना कोई रूप में नाक से एकदम पकड़ लेते हैं। गुड़ जाने गुड़ की गोथरी जाने। माया बहुत फंसाती है। एक/दो से मिले बिना रह नहीं सकते हैं। अब वो देही अभिमानी कैसे बनेंगे?बाप को याद कैसे करें?यह माया के विघ्न आते हैं। माया का तूफान किसी को भी छोड़ता नहीं है। बच्चे तो झट अंधेरे में आ जाते हैं। देह अभिमान में आना अंधेरा है। फिर अंधेरे में ठोकरें खाते हैं। माया बड़ी जबरदस्त है। यह ल.ना. विश्व के मालिक कैसे बने यह किसी को भी पता नहीं है। तुम तो कहते हो कि कल की बात है कि वो राज्य करते थे। मनुष्य तो लाखों वर्ष कह देते हैं। माया ने मनुष्यों को एकदम पत्थर बुद्धि बना दिया है। अब तुम पत्थर बुद्धि से पारस बुद्धि बनते हो। पारसनाथ का मंदिर भी है ;परंतु वो कौन है यह कोई नहीं जानते। मनुष्य बिल्कुल ही घोर अंधेरे में हैं। अब बाप कितनी अच्छी बातें समझाते हैं। फिर तो बाकी हर एक की बुद्धि पर है। पढ़ाने वाला तो एक ही है ना। पढ़ने वाले तो ढेर होते जावेंगे। गली2 में तुम्हारा स्कूल हो जावेगा। गेट वे टू हैविन। मनुष्य एक भी नहीं जो समझे कि हम नर्क में हैं। कितने बड़े2 सन्यासी आदि हैं जिनको सोने–चांदी की कुर्सी आदि पर बिठाते हैं। बाप समझाते हैं कि सब भ्रष्टाचारी पुजारी हैं। पूज्य होते ही हैं सतयुग में। पुजारी होते हैं कलियुग में। मनुष्य फिर समझते हैं कि भगवान ही पूज्य पुजारी बनते हैं। आप भी भगवान हो। आप ही यह सब खेल करते हो। आप ही विषय वासना में .....जाते हो। कोई से भी विकार किया तो भी मालिक हो। तुम भी भगवान तो हम भी भगवान। कितनी शैतानी है। यह है ही रावण राज्य। अच्छा ओम।